**SHODH SAMAGAM**

**ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)**

# भारतीय विदेश नीति का विश्लेषणात्मक अध्ययन

**शिवचन्द्र झा,** पी.–एच.डी., राजनीति विज्ञान विभाग
सोना देवी विश्वविद्यालय, घाटशिला, झारखंड, भारत

**ORIGINAL ARTICLE**

**Author**
**शिवचन्द्र झा,** पी.–एच.डी.
**E-mail :** shivchandrajha0@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 30/05/2025
Revised on : 31/07/2025
Accepted on : 11/08/2025
Overall Similarity : 10% on 01/08/2025

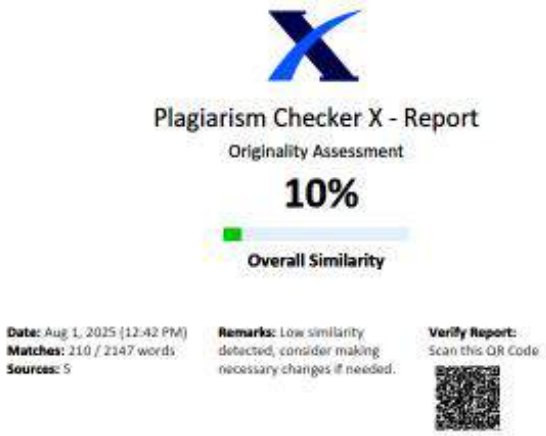


## शोध सार

*विदेश नीति (Foreign Policy) किसी भी देश की वह रणनीति है जिसके माध्यम से वह अन्य देशों, अंतरराष्ट्रीय संगठनों और वैश्विक मुद्दों के साथ अपने संबंधों को संचालित करता है। यह नीति देश की सुरक्षा, आर्थिक हितों, राजनीतिक विचारधारा और सांस्कृतिक मूल्यों के आधार पर निर्धारित की जाती है। भारत की विदेश नीति, ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' (संपूर्ण विश्व एक परिवार है) की भावना पर आधारित है। यह नीति शांति, सहयोग, आपसी सम्मान और समानता के सिद्धांतों को अपनाकर अंतरराष्ट्रीय संबंधों को मजबूती देती है। भारत का उद्देश्य न केवल अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करना है, बल्कि वैश्विक शांति, विकास और स्थिरता में सक्रिय भूमिका निभाना भी है। यह नीति समय के साथ विकसित हुई है और बदलती वैश्विक परिस्थितियों के अनुसार लचीलापन और व्यावहारिकता अपनाई है।*

## मुख्य शब्द

*गुटनिरपेक्ष, पंचशील, स्वायत्तता, अखंडता, संप्रभुता, विदेश नीति.*

## भूमिका

स्वतंत्रता के बाद भारत ने अपनी विदेश नीति को सजग तथा आत्मनिर्भरता पर आधारित बनाया। जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में भारत ने गुटनिरपेक्षता (Non-Alignment) और पंचशील सिद्धांत को स्थापित किया। नेहरू ने शीत युद्ध के दौरान किसी भी महाशक्ति शिबिर (पश्चिम या पूर्व ब्लॉक) से जुड़ने से परहेज किया और विकासशील देशों के सहयोग की वकालत की। 1955 में बंडुंग कॉन्फ्रेंस और 1961 में बेलग्रेड में पहले NAM सम्मेलन की नींव रखी गई, जिससे भारत वैश्विक मंच पर नव स्वतंत्र देशों के नेता के 4रूप में उभरा। 1954 में भारत और चीन ने पंचशील सिद्धांत निर्धारित किया,

जिसमें पांच मूलभूत सिद्धांत–क्षेत्रीय अखंडता एवं संप्रभुता का सम्मान, अहिंसा, अंतर्विरोध न करना, समानता और शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व शामिल थे। इन सिद्धांतों ने नए स्वतंत्र राष्ट्रों के बीच मित्रता बढ़ाने का मार्ग प्रशस्त किया। नेहरू युग में भारत संयुक्त राष्ट्र का संस्थापक सदस्य रहा और वहां उपनिवेशवाद विरोधी तथा मानवाधिकार विषयों पर सक्रिय रहा।

- **प्रमुख घटनाक्रम और सिद्धांतः** 1949 में भूटान, 1950 में नेपाल के साथ मैत्री संधि; 1955 में इंडोनेशिया के बांडुंग शहर में 18 से 24 अप्रैल के बीच एशिया और अफ्रीका के देशों का पहला सम्मेलन आयोजित किया गया, 1961 में पहला NAM सम्मेलन, 1962 में चीन–भारत सीमा युद्ध, पंचशील पर 1954 का भारत–चीन समझौता।
- **निरपेक्षता और पंचशीलः** नेहरू ने दोनों महाशक्तियों से बचते हुए, शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व पर बल दिया। पंचशील के पाँच सिद्धांतों ने भारत–चीन संबन्धों तथा अंतरराष्ट्रीय कूटनीति को आकार दिया।
- **दशा–दिशाः** इस दौर में भारत ने उपनिवेशवाद के खिलाफ आवाज उठाई और विकासशील देशों के बीच एकीकृत विश्व व्यवस्था की वकालत की।

## इंदिरा गांधी युग

इंदिरा गांधी के दौर में भारत ने सामरिक और रणनीतिक मोर्चों पर सक्रिय भूमिका निभाई। 1971 में पाकिस्तान के साथ युद्ध से पूर्व भारत ने सोवियत संघ के साथ शांति, मित्रता और सहयोग संधि पर हस्ताक्षर किए, जिससे सुरक्षा कवच मजबूत हुआ। यह संधि भारत के पहले की गुटनिरपेक्ष नीति में बड़ा बदलाव थी और बांग्लादेश की मुक्ति संग्राम में भी सहायक थी। इसी कालखंड में दिसंबर 1971 में पाकिस्तान के ख़िलाफ़ भारत ने निर्णायक जीत हासिल कर बांग्लादेश स्वतंत्रता में अहम भूमिका निभाई। इंडो–पाक युद्ध (1965) और बांग्लादेश युद्ध ने क्षेत्रीय राजनीति को प्रभावित किया।

- **परमाणु नीतिः** मार्च 1974 में इंदिरा गांधी के नेतृत्व में पोखरण में पहला परमाणु परीक्षण (ऑपरेशन स्माइलिंग बुद्ध) सफलतापूर्वक किया गया। इंदिरा ने इसे 'शांतिपूर्ण परमाणु विस्फोट' कहा, जिसके बाद भारत को अंतरराष्ट्रीय आलोचना का सामना करना पड़ा। इस कदम ने भारत को परमाणु शक्ति समूह में प्रतिष्ठित किया।
- **गुटनिरपेक्ष आंदोलनः** इंदिरा गांधी ने 1970–80 के दशक में भी NAM में सक्रियता बरकरार रखी। 1983 में नई दिल्ली में NAM का शिखर सम्मेलन आयोजित कर भारत ने तीसरी दुनिया की आवाज को आगे बढ़ाया।
- **दशा–दिशाः** इंदिरा के समय भारत ने सामरिक बहाव अपनाया दृ पूर्वी क्षेत्र में रूस के साथ निकटता, ग़ल्फ़ में मित्रता और अफ्रीका–एशिया में सहयोग। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत ने उपनिवेशवाद विरोधी और दक्षिण–दक्षिण सहयोग को आगे रखा।

## उदारीकरण के बाद की विदेश नीति

1991 में विश्वव्यापी आर्थिक परिदृश्य बदलने लगा और भारत ने आंतरिक आर्थिक उदारीकरण की पहल की। विदेश नीति में भी इस दौर में बदलाव आया। प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिम्हा राव के नेतृत्व में 'पूर्व की ओर दृष्टि' (Look East) नीति लागू की गई। इसका उद्देश्य आर्थिक और रणनीतिक दृष्टि से दक्षिण–पूर्व एशिया के साथ घनिष्ठ संबंध बनाना था। इस नीति के तहत भारत ने 1992 में ASEAN के साथ संवाद भागीदार संबंध स्थापित किए और व्यापार, निवेश व कनेक्टिविटी पर जोर दिया।

- **अमेरिका और पश्चिमः** 1990 के दशक में भारत–यूएस संबंधों में सुधार हुआ। 1992 में प्राथमिक व्यापार समझौते और बाद में 2005 में परमाणु समझौते ने द्विपक्षीय कूटनीति को मजबूती दी। भारत ने पश्चिमी जगत में निर्यात–बाजार और निवेश अवसर तलाशे।
- **आसियान एवं पूर्व एशियाः** नव उद्योगीकरण से पहले की तुलना में इस दौर में भारत ने जापान, कोरिया

एवं दक्षिण–पूर्व एशियाई देशों से तकनीकी साझेदारी बढ़ाई। नमूना के रूप में 2000 में जापान–भारत ने ग्लोबल पार्टनरशिप की घोषणा की।

- **अन्यः** इस काल में दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (SAARC) सक्रिय हुआ (1985 स्थापित, लेकिन 90 के दशक में व्यवहारिक पहलें शुरू)। भारत ने इस दौरान दुनिया भर में अपने आर्थिक हितों की रक्षा पर भी ध्यान दिया।

## 21वीं सदी की नई रणनीतियाँ

नए सदी में भारत ने तेज़ी से वैश्विक भूमिका अपनाई। अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार में 1998 में पोखरण–II परमाणु परीक्षणों से भारत औपचारिक रूप से परमाणु शक्ति राष्ट्र बन गया। 2000 के दशक में भारत–यूएस रणनीतिक साझेदारी गहरी हुई; 2005 के हाइड्राबाद समझौते से भारत को अंतरराष्ट्रीय परमाणु आपूर्ति समूह (NSG) के सहयोग से ऊर्जा संसाधन उपलब्ध हुए।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी (2014 से अब तक) के दौर में विदेश नीति में कई नई पहलों का संचार हुआ। 2014 में "पूर्व की ओर दृष्टि" नीति को विकसित कर 'एक्ट ईस्ट' नीति लागू की गई, जिसमें सद्भावना, आर्थिक साझेदारी और सुरक्षा सहयोग को विस्तार मिला। मोदी सरकार ने पड़ोसी प्रथम नीति पर विशेष बल दिया। 2024 में प्रधानमंत्री मोदी ने शपथ ग्रहण समारोह में भी 'Neighbourhood First' नीति तथा SAGAR (क्षेत्रीय सुरक्षा और समृद्धि) पर जोर दिया। भारत ने क्वाड (भारत, अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया) में सक्रिय भागीदारी बढ़ाई, जो हिंद–प्रशांत क्षेत्र में खुला और आज़ाद रणनीतिक परिवेश सुनिश्चित करता है।

- **जलवायु परिवर्तनः** 2020 के दशक में भारत वैश्विक जलवायु विमर्श में ऊँचे उठने लगा। COP26 (2021) में भारत ने 2070 तक 'नेट–जीरो' उत्सर्जन लक्ष्य घोषित किया साथ ही ऊर्जा संक्रमण व अक्षय ऊर्जा में बड़े निवेश के प्रावधान किए गए।
- **प्रौद्योगिकी एवं रक्षाः** रक्षा क्षेत्र में ब्रह्मोस मिसाइल, तेजस विमान आदि प्रणालियाँ विकसित की गईं। 2018 में रूस से S–400 मिसाइल प्रणाली खरीदी गई; इससे भारत–अमेरिका संबंधों में मामूली दबाव आया, पर दोनों देशों ने रक्षायोग्य साझेदारी जारी रखी।
- **वैश्विक मंचः** 2023 में भारत ने पहली बार G20 की अध्यक्षता संभाली और 'वन परिवार, वन ग्रह, एक भविष्य' का संदेश दिया। इस दौरान भारत ने वैश्विक दक्षिण के हितों (जैसे अफ्रीकी संघ को स्थायी G20 सदस्यता देने) को आगे रखा।

## वैश्विक मंचों पर भारत की भूमिका

स्वतंत्रता के बाद से भारत विश्व मंचों पर सक्रिय रहा। यह संयुक्त राष्ट्र का संस्थापक सदस्य है और कई बार अस्थायी सुरक्षा परिषद् का प्रतिनिधित्व कर चुका है। नेहरू के समय भारत ने शांतिपूर्वक सह–अस्तित्व और उपनिवेशवाद विरोधी एजेंडा को केन्द्र में रखा। गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) में भारत की पहल से उस समय के कई नए राष्ट्रों को सहयोग मिला।

वर्तमान में भारत ब्रिक्स (ब्राज़ील, रूस, भारत, चीन, दक्षिण अफ्रीका) और सिल्क रोड इनिशिएटिव जैसे मंचों का भी हिस्सा है। वर्ल्ड ट्रेड ऑर्गेनाइजेशन (WTO) में भारत एक मजबूत आवाज रहा है। 2023 के G20 सम्मेलन में भारत ने अपनी अध्यक्षता के दौरान बहुपक्षवाद और वैश्विक दक्षिण के समावेश पर जोर दिया। इसके अतिरिक्त भारत विकासशील देशों के लिए वित्तीय सहायताओं की माँग, व्यवसायक न्याय और स्वच्छ ऊर्जा की वकालत करता है।

## प्रमुख रणनीतिक साझेदारियाँ

विभिन्न महाशक्तिशाली राष्ट्रों के साथ भारत ने समय–समय पर रणनीतिक गठबंधन बनाए हैं:

- **संयुक्त राज्य अमेरिकाः** शीतयुद्ध के बाद भारत–यूएस संबंधों में तेजी आई। 2005 के परमाणु समझौते से

आर्थिक एवं सुरक्षा सहयोग में वृद्धि हुई। आज दोनों देश मिलकर क्वाड, द्विपक्षीय रक्षा वार्ता और तकनीकी साझेदारी में रुचि रखते हैं।

- **रूस (पूर्व सोवियत संघ):** भारत और सोवियत संघ के बीच 1971 की मित्रता संधि ने रक्षा सहयोग को गहरा किया। अब भी रूस भारत का प्रमुख सैन्य और ऊर्जा साझेदार है। हालिया वर्षों में दोनों ने S–400 मिसाइल प्रणाली और परमाणु ऊर्जा संयंत्रों पर सहयोग जारी रखा।
- **चीन:** आर्थिक दृष्टि से चीन एक बड़ा साझेदार है, लेकिन सीमा विवादों और सामरिक प्रतिस्पर्धा के चलते रिश्ते तनावपूर्ण हैं। 2020 में गलवान घाटी में सैन्य झड़प के बाद भारत ने सुरक्षा तैयारियों को मजबूत किया।
- **जापान:** 2000 में जापान–भारत के बीच ग्लोबल पार्टनरशिप की स्थापना हुई, जिसे बाद में 2006 में 'ग्लोबल और रणनीतिक साझेदारी' बनाया गया। 2014 में इसे 'स्पेशल स्ट्रैटेजिक एंड ग्लोबल पार्टनरशिप' तक उन्नत किया गया। दोनों देश अब अभिनव प्रौद्योगिकी, पूर्वी भारत में आधारभूत संरचना विकास और Indo-Pacific में सहयोग बढ़ा रहे हैं।
- **अन्य:** भारत ने दक्षिण–पूर्व एशिया (ASEAN), मध्य पूर्व, अफ्रीका और प्रशांत के कई देशों के साथ भी कूटनीतिक एवं आर्थिक समृद्धि के लिए साझेदारी बढ़ाई है।

## वर्तमान वैश्विक चुनौतियाँ

आज दुनिया कई चुनौतियों का सामना कर रही है, जिनमें भारत की भूमिका निर्णायक है:

- **रूस–यूक्रेन युद्ध:** रूस के यूक्रेन आक्रमण (2022) पर भारत ने निरपेक्ष रुख अपनाया और महत्त्वपूर्ण मत–विभाजन पर अमूमन निरपेक्ष रहा। भारत ने यूक्रेन में अपने छात्रों और नागरिकों की सुरक्षित वापसी सुनिश्चित की।
- **भारत–चीन तनाव:** भारत–चीन सीमा विवाद वर्षों से जारी है। 2020–21 के दौरान कई स्थल जैसे गलवान, डेमचौक एवं लदाख में झड़पें हुईं। इन घटनाओं ने भारत को अपनी सीमा सुरक्षा और रणनीति पर पुनर्विचार करने को मजबूर किया।
- **जलवायु परिवर्तन:** बढ़ती ग्लोबल वार्मिंग के बीच भारत का रुख अहम है। भारत जलवायु संकट को विकासशील देशों के आर्थिक विकास से जोड़ा देखता है इसलिए 2021 में भारत ने 2070 तक नेट–जीरो कार्बन लक्ष्य घोषित किया और हरित ऊर्जा निवेश बढ़ाया। भारत ने बहुपक्षीय मंचों (जैसे COP26/27) पर ऐसी पहलों का समर्थन किया जिससे विकासशील देशों को तकनीकी और वित्तीय सहायता मिल सके।

## भारत एवं पाकिस्तान

वर्तमान में भारत और पाकिस्तान के बीच संबंध अत्यंत तनावपूर्ण हैं, जो हाल के आतंकवादी हमलों और सैन्य कार्रवाइयों के कारण और भी बिगड़ गए हैं।

## हालिया घटनाक्रम

- **पहलगाम आतंकी हमला:** 22 अप्रैल 2025 को जम्मू–कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले में 26 हिंदू तीर्थयात्रियों की हत्या हुई, जिसका आरोप भारत ने पाकिस्तान–समर्थित आतंकवादियों पर लगाया।
- **ऑपरेशन सिंदूर:** इस हमले के जवाब में भारत ने "ऑपरेशन सिंदूर" के तहत पाकिस्तान में आतंकवादी ठिकानों पर हवाई हमले किए।
- **सीज़फायर और उल्लंघन:** संयुक्त राज्य अमेरिका की मध्यस्थता से दोनों देशों के बीच संघर्ष विराम हुआ, लेकिन इसके कुछ ही घंटों बाद सीमा पर फिर से गोलीबारी और ड्रोन हमलों की घटनाएं सामने आईं।

## अंतरराष्ट्रीय प्रतिक्रिया

- **अमेरिका की भूमिका:** अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने दोनों देशों के बीच

तनाव कम करने के लिए मध्यस्थता की पेशकश की। पाकिस्तान ने अमेरिका की भूमिका की सराहना की, जबकि भारत ने इसे खारिज करते हुए कहा कि संघर्ष विराम दोनों देशों के सैन्य अधिकारियों के सीधे संपर्क से संभव हुआ।

- **संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् (UNSC):** पहलगाम हमले के बाद UNSC ने बंद कमरे में बैठक आयोजित की, जिसमें भारत ने आतंकवाद के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग की।

## जल संकट और सिंधु जल संधि

भारत ने पाकिस्तान के साथ 1960 की सिंधु जल संधि को निलंबित कर दिया है, जिससे पाकिस्तान की कृषि पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। यह कदम भारत द्वारा पाकिस्तान पर दबाव बनाने की रणनीति के रूप में देखा जा रहा है।

## आगे की राह

हालांकि दोनों देशों के सैन्य अधिकारी संघर्ष विराम की स्थिति की समीक्षा के लिए बातचीत कर रहे हैं, लेकिन सीमा पर तनाव और राजनीतिक दबाव के कारण स्थायी समाधान की संभावना कम दिख रही है।

## निष्कर्ष

भारत की विदेश नीति अब यथार्थवाद पर आधारित है, जिसमें राष्ट्रीय हितों की प्राथमिकता है। भारत की विदेश नीति अब एक सक्रिय, आत्मनिर्भर और संतुलित दृष्टिकोण पर आधारित है, जो राष्ट्रीय हितों की रक्षा, वैश्विक मंचों पर प्रभाव बढ़ाने और क्षेत्रीय स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है। यह नीति भारत को एक उभरती हुई वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित करने में सहायक है। इन सभी पहलों से स्पष्ट है कि भारत एक सक्रिय बहुपक्षवादी नीतिवाला राष्ट्र बनकर उभरा है। वह निरपेक्षता की विरासत को आधुनिक सुरक्षा चुनौतियों के प्रति लचीलापन और साझेदारी से जोड़ रहा है। आज भारत ग्लोबल साउथ की आवाज़ की पैरवी करते हुए विश्व राजनीति में संतुलन बनाने का प्रयास कर रहा है।

## संदर्भ सूची

1. गांगुली, सुमित (2018) *भारत की विदेश नीति,* ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, Oxford University Press , OUP India.
2. खन्ना, एन.; अरोड़ा, लिपाक्षी; कुमार, लेस्ली (2019) *भारत की विदेश,* विकास पब्लिशिंग, नोएडा, उत्तरप्रदेश।
3. भाटिया, विजय कुमार (2019) *भारतीय विदेश नीति,* अकादमिक पब्लिकेशन, दिल्ली।
4. दीक्षित, जे. एन. (2017) *भारतीय विदेश नीति,* प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. जयशंकर, एस. (2020) *The India Way: Strategies for an Uncertain World,* हार्पर कॉलिन्स, नोएडा, उत्तरप्रदेश।
6. जयशंकर, एस. (2024) *Why Bharat Matters,* रूपा पब्लिकेशन्स इंडिया, गुरुग्राम, हरियाणा।
7. दत्ता, रे; सुनील, के. (2009) *Looking East to Look West: Lee Kuan Yew's Mission India,* पेंगुइन, नई दिल्ली।

********